लघु सिद्धान्त कौमुदी

(तिङन्त प्रक्रिया एवं समास)

ज्ञान प्रकाशन, मेरठ

[विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा उद्धृत्
नवीनतम् पाठ्यक्रमानुसार]

लघु सिद्धान्तकौमुदी

[तिङन्त प्रक्रिया एवं सामासिक पदों का लौकिक विग्रह]

निर्देशक :—

आचार्य विनोद कुमार शास्त्री

(व्याकरणाचार्य)

(प्राचार्य)

श्री महानन्द संस्कृत विद्यालय

लाक्षागृह बरनावा (बागपत)

लेखक :—

ओमपाल सिंहः

(शोधकर्त्ता)

चौ० चरणसिंह विश्वविद्यालय

(मेरठ)

☎ (0121) 2519466

ज्ञान प्रकाशन, मेरठ।

विषय-अकुक्रमणिका

क्र० सं०	विषय	पृष्ठ सं०
१.	प्राक्कथन	५- ६
२.	प्रश्न-पत्र-प्रारूप	७- ८
३.	आवश्यक निर्देश	९-१२
४.	लट्लकार	१३-१७
५.	लोट्लकार	१८-२२
६.	लृट् लकार	२३-२७
७.	लङ् लकार	२८-३२
८.	विधिलिङ् लकार	३३-३८
९.	अथ समास प्रकरणम्	३९-४२
१०.	लघु सिद्धान्त कौमुदीस्थ समस्त सामासिक पदों का लौकिक-विग्रह निम्नलिखित है	४३-४८

प्राक्कथन

संस्कृत भाषा विश्व की सबसे समृद्ध भाषा है। इस भाषा का व्याकरण भी सबसे समृद्ध एवं वैज्ञानिक है। व्याकरण शास्त्र एक गहन वन के समान है, जिसमें प्रवेश के अनन्तर निकलना दुस्तर है।

परन्तु आचार्य वरदराज ने इस विशाल व्याकरण शास्त्र को जन-सामान्य तक पहुँचाने का महत्वपूर्ण कार्य किया है। उनकी लघु सिद्धान्त कौमुदी, व्याकरण शास्त्र के जिज्ञासुओं में इतनी प्रतिष्ठा को प्राप्त हुयी कि कहा जाने लगा **"कौमुदी यदि कण्ठस्था वृथा भाष्ये परिश्रमः", "कौमुदी यद्यकण्ठस्था वृथा भाष्ये परिश्रमः"** अर्थात् कौमुदी यदि कण्ठस्थ है तो भाष्य में परिश्रम करना व्यर्थ है और यदि कौमुदी कण्ठस्थ नहीं है तो भी भाष्य में परिश्रम करना व्यर्थ है अर्थात् बिना कौमुदी पढ़े भाष्य समझ में नहीं आ सकता है।

चौ० चरण सिंह विश्वविद्यालय मेरठ की बी० ए० द्वितीय वर्ष (संस्कृत II) में इसी लघु सिद्धान्त कौमुदी के तिङन्त प्रकरण की भू धातु के पाँच लकारों तथा समास प्रकरण के सामासिक पदों के लौकिक विग्रहों को पाठ्यक्रम में निर्धारित किया गया है। मैं जब बी० ए० तृतीय वर्ष का विद्यार्थी था तब सुबन्त प्रक्रिया पाठ्यक्रम में था। यतः मैं तो गुरुकुलीय विद्यार्थी था, अतः मुझे तो सुबन्त प्रकरण समझने में अधिक कठिनता का सामना नहीं करना पड़ा, परन्तु अन्य जो छात्र सहपाठी थे उन्हें बहुत परिश्रम करना पड़ा। तभी मैंने यह निश्चय किया कि मैं स्नातक कक्षा के विद्यार्थियों की व्याकरण विषयक सुगमता के लिये कुछ कार्य करूँगा। यह प्रयास उसी विचार का प्रतिफल है।

इससे पूर्व तिङन्त प्रकरण को सरलतापूर्वक समझने के लिये छात्रों के समक्ष कोई उपयुक्त पुस्तक उपलब्ध नहीं थी, यद्यपि मैं भी अभी विद्याध्ययन कर रहा हूँ, और मेरा व्याकरण शास्त्र पर अधिकार भी नहीं है पुनरपि गुरुओं के आशीर्वाद से मैं यह कार्य करने का साहस कर रहा हूँ। मैं अपने इस कार्य में कितना सफल रहा हूँ, इसका निर्णय अध्येता विद्यार्थियों पर छोड़ता हूँ। मैं तो यहाँ अपने उन गुरुओं का आभार व्यक्त करना चाहूँगा, जिनके शुभाशीष से मैं इस दुरूह कार्य को विद्यार्थी जीवन में ही करने का साहस जुटा सका।

मैं सर्वप्रथम अपने व्याकरण के गुरु एवं श्री महानन्द संस्कृत विद्यालय गुरुकुल लाक्षागृह बरनावा (बागपत) के प्रधानाचार्य **"आचार्य श्री विनोद कुमार शास्त्री"** का आभार व्यक्त करना चाहूँगा, जिनका इस कार्य में पर्याप्त स्नेह व आशीर्वाद प्राप्त हुआ, उन्होंने प्रूफ रीडिंग, संशोधन तथा आवश्यक दिशा निर्देश

लिखकर मेरा उत्साहवर्द्धन किया। इसके अलावा मैं यज्ञ पुरुष आचार्य गुरुवचन शास्त्री (व्याकरणाचार्य), योगाचार्य अरविन्द शास्त्री का भी हृदय से आभारी हूँ जिन्होंने इस शुभ कार्य के लिये मुझे सतत् प्रेरित किया एवं अपने स्नेहाशीष से मुझे कृतार्थ किया।

इनके अलावा 'डॉ० ओमकार सिंह त्यागी' रासना, कॉलिज, डॉ० भारतेन्दु पाण्डेय (एन० ए० एस०, कॉलिज), 'डॉ० सुधाकराचार्य त्रिपाठी' (अध्यक्ष) संस्कृत विभाग, चौ० चरण सिंह वि० वि० मेरठ, जिनके आशीर्वाद की छत्रछाया में मैंने स्नातक एवं स्नातकोत्तर की उपाधि प्राप्त की उनका और 'पं० शिवकुमार शुक्ल' जिन्होंने मुझे इस पवित्र 'संस्कृत' भाषा को पढ़ने की प्रेरणा दी, मैं इन पूज्य गुरुजनों के ऋण से कैसे उऋण हो सकूँगा ?

आचार्य विक्रम शास्त्री, डॉ० योगेश, भ्राता जयवीर शास्त्री एवं रविन्द्र शास्त्री को कैसे भूल सकता हूँ जिन्होंने हर समय मुझे इस कार्य के लिये प्रेरणा प्रदान की।

और आभार व्यक्त करता हूँ संस्कृत साहित्य के ज्ञान-विज्ञान को जन सामान्य तक पहुँचाने में संलग्न ज्ञान प्रकाशन के संचालक **श्री जगदीश प्रसाद शर्मा, सुधीर शर्मा एवं अनिल शर्मा** का।

अन्त में मेरा सभी विद्वद्जनों से विनम्र अनुरोध है कि इस पुस्तक में बाल-सुलभ अज्ञानतावश यदि कोई त्रुटि रह गयी हो तो तदर्थ मुझे क्षमा करेंगे, तथा अपने मूल्यवान परामर्शों से अवगत कराकर कृतार्थ करेंगे। जिससे भविष्य में त्रुटियों का परिहार किया जा सके।

विद्वद्जनचरणानुरागी
ओमपाल सिंह
(एम० ए० संस्कृत)
ग्रा०—डेरियो, राछौती
मेरठ (उ० प्र०)
२५०१०६

श्रावणी संवत् २०६१ (रक्षाबन्धन)
तदनुसार ३० अगस्त, २००४

प्रश्न-पत्र-प्रारूप

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न—

(१) 'भवति' धातु रूप की सिद्धि कीजिए।
(२) 'भवतु' धातु रूप की सिद्धि कीजिए।
(३) 'अभवाम' धातु रूप की सिद्धि कीजिए।
(४) 'भवेताम्' धातु रूप की सिद्धि कीजिए।
(५) 'भविष्यति' धातु रूप की सिद्धि कीजिए।
(६) 'भवन्ति' धातु रूप की सिद्धि कीजिए।
(७) 'भवन्तु' धातु रूप की सिद्धि कीजिए।
(८) 'भवेत' धातु रूप की सिद्धि कीजिए।
(९) 'भवामि' धातु रूप की सिद्धि कीजिए।
(१०) 'भवसि' धातु रूप की सिद्धि कीजिए।
(११) समस्त तिङ् प्रत्ययों का सूत्र सहित उल्लेख कीजिए।

लघु उत्तरीय प्रश्न—

(१) भू धातु के लट् लकार प्रथम पुरुष के तीनों वचनों नें रूप लिखो।
(२) भू धातु के लोट् लकार मध्यम पुरुष के तीनों वचनों में रूप लिखो।
(३) भू धातु के विधिलिङ् लकार के प्रथम पुरुष के तीनों वचनों में रूप लिखो।
(४) लट् लकार में प्रयुक्त होने वाले सूत्र का नाम लिखो।
(५) विधिलिङ् लकार में प्रयुक्त होने वाले सूत्र का नाम लिखो।
(६) र को विसर्ग आदेश करने वाले सूत्र का नाम लिखो।
(७) सार्वधातुक संज्ञा विधायक सूत्र का नाम लिखो।
(८) अदन्त अङ्ग को दीर्घ एकादेश करने वाले सूत्र का नाम लिखो।

निम्नलिखित सूत्रों को पूरा करो—

(१) तिप्तस्झिसिप्थस्थ..................
(२) सार्वधातुका..................
(३) स्यतासी..................
(४) लुङ्लङ्लृङ्क्ष्व..................
(५) विधिनिमन्त्रणामन्त्रणा..................
(६) यासुट् परस्मैपदेषु..................

निम्नलिखित सामासिक पदों का लौकिक विग्रह लिखो—

(१) वागर्थाविव (२) अधिहरि (३) नरकपतितः
(४) शंङ्कुलाखण्डः (५) यूपदारु (६) स्तोकान्मुखः
(७) राजपुरुषः (८) अक्षशौण्डः (९) पूर्वेषुकामशमी
(१०) परमराजः (११) अनश्वः (१२) उरीकृत्य
(१३) कु पुरुषः (१४) कच्छपि (१५) पञ्चगवम्

(१६) अहोरात्रः (१७) पीताम्बरः (१८) कण्ठेकालः

अति लघु उत्तरीय एवं वैकल्पिक प्रश्नोत्तर—

(१) 'वर्तमाने लट्' किस लकार में प्रयुक्त होता है ?
(क) लट् लकार (ख) लृट् लकार (ग) लोट् लकार (घ) लङ् लकार

(२) 'विधिनिमन्त्रणामन्त्रणाधीष्ट संप्रश्न प्रार्थनेषुलिङ्' किस लकार का सूत्र है ?
(क) लङ् (ख) विधिलिङ् (ग) लृट (घ) लट्

(३) इनमें 'लृट लकार' में प्रयुक्त होने वाला सूत्र कौन-सा है ?
(क) स्यतासी लृलुटोः (ख) आदेश प्रत्ययोः (ग) लृट् शेषे च (घ) ससजुषोरुः

(४) अन्तिम हल् की इत्संज्ञा करने वाला सूत्र कौन-सा है ?
(क) न विभक्तौ तुस्माः (ख) लशक्वतद्धिते (ग) हलन्त्यम् (घ) चुटू

(५) दन्त सकार को मूर्धन्य षकार करने वाला सूत्र कौन-सा है ?
(क) ससजुषो रुः (ख) खरवसानयोः (ग) आदेश प्रत्ययोः (घ) लृट् शेषे च

(६) 'भूतपूर्वः' में समास बताइये ?
(क) अव्ययी समास (ख) केवल समास (ग) तत्पुरुष (घ) बहुब्रीहि

(७) 'अधिहरि' में कौन-सा समास है ?
(क) बहुब्रीहि (ख) आयघी (ग) द्विगु (घ) केवल समास

(८) कृष्णश्रितः में कौन-सा समास है ?
(क) द्वितीया तत्पुरुष (ख) तृतीया तत्पुरुष (ग) पञ्चमी तत्पुरुष (घ) षष्ठी तत्पुरुष

(९) 'अब्राह्मणः' में कौन-सा समास है ?
(क) गति तत्पुरुष (ख) नञ तत्पुरुष (ग) पञ्चमी तत्पुरुष (घ) उपपद तत्पुरुष

(१०) 'द्व्यङ्गुलम्' में कौन-सा समास है ?
(क) द्विगु समास (ख) द्वन्द्व समास
(घ) केवल समास (घ) बहुब्रीहि समास

(११) 'सुपुरुष' में कौन-सा समास है ?
(क) गति तत्पुरुष (ख) प्रादित तत्पुरुष
(ग) उपपद तत्पुरुष (घ) सप्तमी तत्पुरुष

(१२) 'कच्छपि' में कौन-सा समास है ?
(क) उपपद तत्पुरुष (ख) गति तत्पुरुष (ग) नञ तत्पुरुष (घ) प्रादित तत्पुरुष

(१३) 'मयूरी कक्कुटौ' में कौन सा समास है ?
(क) द्वन्द्व समास (ख) बहुब्रीहि समास
(ग) द्विगु समास (घ) अव्ययी भाव समास

(१४) 'पित्तरौ' में कौन-सा समास है ?
(क) बहुब्रीहि समास (ख) द्वन्द्व समास (ग) द्विगु समास (घ) अव्ययी भाव

(१५) 'पीताम्बरः' में कौन-सा समास है ?
(क) बहुब्रीहि (ख) द्वन्द्व (ग) तत्पुरुष (घ) अव्ययी भाव

आवश्यक निर्देश

तिङन्त प्रक्रिया यद्यपि एक जटिल प्रक्रिया है। इसमें ग्यारह लकार होते हैं। दस लकारों का लौकिक व एक लकार का वैदिक साहित्य में प्रयोग होता है। परन्तु पाठ्य क्रम में केवल पाँच लकार (लट्, लोट, लृट्, लङ्, विधिलिङ्) ही निर्धारित हैं। अत: उन पाँच लकारों में प्रयुक्त होने वाली संज्ञाओं और सूत्रों का संक्षिप्त निर्देश नीचे दिया जाता है। यदि छात्र इन निर्देशों का सम्यक् प्रकारेण अध्ययन कर हृदयङ्गम कर लेंगे तो उन्हें इस पुस्तक में प्रदर्शित सिद्धियों को समझने में किञ्चित् भी कठिनाई नहीं होगी।

(१) **पाँच लकार**—लट्, लोट्, लृट्, लङ्, विधिलिङ्।

(२) **तिङ् प्रत्यय**—तिप् से लेकर महिङ् तक १८ प्रत्ययों को तिङ् प्रत्यय कहते हैं। इन्हें दो भागों में विभक्त किया जाता है। जोकि निम्न हैं—

१. परस्मैपदी

तिप्	तस्	झि
सिप्	थस्	थ
मिप्	वस्	मस्

२. आत्मनेपदी

त	आतम्	झ
थास्	आथाम्	ध्वम्
इट्	वहि	महिङ्

उपर्युक्त १८ प्रत्ययों में से परस्मैपदी प्रत्ययों में निर्धारित भू धातु के पाँच लकारों की सिद्धि हेतु उपर्युक्त परस्मैपदी ९ प्रत्ययों का प्रयोग किया जाता है।

(३) **अन्य प्रत्यय**—उपर्युक्त मुख्य प्रत्ययों के अतिरिक्त कुछ अन्य प्रत्यय भी होते हैं जो कि धातु और मुख्य प्रत्ययों के बीच में आते हैं। जैसे—शप्, तास्, स्य आदि। लट्, लोट्, लङ्, विधिलिङ् इन चारों लकारों में शप् प्रत्यय होता है। **"कर्त्तरिशप्"**।

लृट लकार में स्य प्रत्यय होता है।

(४) **आदेश**—लट् आदि प्रत्ययों के स्थान पर तिप् आदि प्रत्यय आ जाते हैं। जिन्हें आदेश कहते हैं। **"आदेशाः शत्रुवद् भवन्ति"**। आदेश शत्रु के समान होते

लघु० ३७७ तिप्तस्झिसिप्थस्थमिब्वस्मस् ताऽऽतांझ थासाथां ध्वम् इट् वहि महिङ् /३/४/९९

लघु० ३८७ कर्त्तरि शप् /३/१/६८

हैं—अर्थात ये पूर्व में वर्तमान प्रत्यय को समाप्त करके उसके स्थान पर हो जाते हैं जैसे भू + लट् → भू + ल् → भू + तिप् यहाँ लट् लकार के ल् के स्थान पर तिप् आदेश हो गया है।

(५) **आगम**—तिबादि एवं शबादि प्रत्ययों के अलावा कुछ अन्य शब्द भी आते हैं जिन्हें व्याकरण शास्त्र में आगम कहते हैं। ये प्रकृति या प्रत्यय के अवयव (हिस्सा) होते हैं कहा भी गया है—**"आगमाः मित्रवद् भवन्ति"** आगम मित्र के समान होते हैं। इट्, यासुट्, और अट् आगम मुख्य हैं।

जैसे (भू + इट् + स्य + ति) यहाँ **'आर्द्धधातुकस्येड्वलादेः'** से वलादि आर्द्धधातुक 'स्य' प्रत्यय को 'इट्' का आगम किया गया है अतः यहाँ **'इट् स्य'** का अवयव माना जाएगा। इसी प्रकार (अट् + भू + अ + त्) यहाँ—**"लुङ् लङ् लृङ्क्ष्वडुदात्तः"** से भू धातु को अट् का आगम हुआ है। अतः अट् भू धातु का अवयव हो जाता है। **"यदागमास्तद्गुणीभूताः तद्ग्रहणेन गृह्यन्ते"** अर्थात् आगम जिसको कहे जाते हैं वे उसी के गुण के अनुरूप हो जाते हैं।

(६) **अनुबन्ध**—प्रत्ययों व आगमों के आगे या पीछे कुछ शब्द रहते हैं जिन्हें अनुबन्ध कहते हैं। इन अनुबन्धों का यद्यपि लोप हो जाता है परन्तु ये अनुबन्ध सिद्धियों में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। जैसे—सिप् में 'प्' अनुबन्ध है। 'शप्' में श् और प् अनुबन्ध हैं। अट् में 'ट्' अनुबन्ध है। अनुबन्धों का अपना एक विशेष महत्त्व होता है। जैसे शप् में श् अनुबन्ध "तिङ्शित्सार्वधातुकम्" से सार्वधातुक संज्ञा के लिये प्रयुक्त हुआ है। इसी प्रकार इट् व अट् में 'ट्' अनुबन्ध 'आद्यन्तौ टकितौ' के अनुसार प्रत्यय के एवं धातु के आदि में होने के लिए प्रयुक्त हुआ है।

(७) **इत्संज्ञा**—यह एक अन्वर्थ (अर्थानुसारी) संज्ञा है 'एतिगच्छतीति इत्' जो चला जाता है उसे इत् कहते हैं। इत्संज्ञाविधायक कुछ मुख्य सूत्र निम्न हैं—

(अ) **'हलन्त्यम्'**—प्रत्ययों में या आगमों में अन्त में रहने वाले हल् (व्यञ्जन) की इत्संज्ञा होती है। जैसे—तिप्, सिप्, मिप्, शप्, इट्, अट् आदि में अन्तिम हल् पकार तथा टकार की इत्संज्ञा होती है।

(ब) **लशक्वतद्धिते**—प्रत्यय के आदि में रहने वाले लकार शकार और कवर्ग की इत्संज्ञा होती है तद्धित प्रत्ययों को छोड़कर, जैसे शप् यहाँ प्रत्यय के आदि में शकार है इसकी इत्संज्ञा प्रकृत सूत्र से हो जाती है।

---

४०५ स्यतासी लृलटोः। /३/१/३३

(८) **निषेध—'न विभक्तौ तुस्माः'**—प्रत्ययों के अन्त में रहने वाले सकार मकार और त वर्ग (त, थ, द, ध, न) की इत्संज्ञा नहीं होती है। जैसे तस्, थस्, वस्, मस् आदि प्रत्ययों में अन्तिम व्यञ्जन सकार है—

अतः 'हलन्त्यम्' सूत्र से इत्संज्ञा प्राप्त थी, प्रकृत सूत्र ने निषेध कर दिया।

(९) **लोप—'तस्य लोपः'**—जिस किसी भी वर्ण की इत्संज्ञा हो जाती है उसका लोप हो जाता है।

(१०) **लोपसंज्ञा—'अदर्शन लोपः'**—वर्ण के अदर्शन अर्थात् सुनाई न देने को लोप कहते हैं। व्याकरण शास्त्र शब्द का विषय है अतः यहाँ अदर्शन का अर्थ अश्रवण ही होगा।

(११) **सार्वधातुक संज्ञा—"तिङ्शित् सार्वधातुकम्"** तिङ् और शित् प्रत्ययों की सार्वधातुक संज्ञा होती है। तिप् आदि प्रत्यय तिङ् कहलाते हैं। और जिसमें से श् की इत्संज्ञा होती है उसे शित् कहते हैं। जैसे—'शप्' इसमें 'श्' की इत्संज्ञा व लोप हो जाने के बाद 'अ' शेष बचता है। अतः इसकी शित् होने से सार्वधातुक संज्ञा हो जाती है।

(१२) **गुणविधायकसूत्र—"सार्वधातुकार्द्धधातुकयोः"**—सार्वधातुक या आर्द्धधातुक प्रत्ययों के परे होने पर धातु को गुण हो जाता है। जैसे—भू + शप् + तिप् → (भू + अ + ति) यहाँ शप् के शित् होने से उसकी सार्वधातुक संज्ञा है अतः प्रकृत सूत्र से गुण हो गया है।

(१३) **क्रियाएं**—चेष्टा को क्रिया कहते हैं प्रातः काल से सायंकाल तक मनुष्य जो भी कार्य करता है वे सब क्रियाओं के अन्तर्गत आती हैं जैसे—उठना, बैठना, सोना, खाना, पीना आदि सभी क्रियाएँ हैं।

(१४) **लकार व काल परिचय**—संस्कृत व्याकरण में ग्यारह लकारों का प्रयोग होता है इनमें से दश लकारों का प्रयोग लौकिक साहित्य में एवं शेष एक लकार का प्रयोग वैदिक साहित्य में किया जाता है।

काल तीन प्रकार के होते हैं—वर्तमान्, भूत् और भविष्यत्। इनमें से वर्तमान् काल का बोध कराने के लिये लट् लकार, भूत्काल का बोध कराने के लिये लङ्लकार तथा भविष्यत् का बोध कराने के लिये लृट् लकार का प्रयोग किया जाता है। शेष दो लकारों में लोट् लकार का प्रयोग आज्ञा देने या आज्ञा लेने में किया जाता है और विधिलिङ् का प्रयोग विधि आदि कार्यों में किया जाता है।

लकार	अर्थ	सूत्र
१ लट् लकार	वर्तमानकाल	'वर्तमाने लट्
२ लोट् लकार	आज्ञार्थक	'लोट् च'
३ लृट् लकार	भविष्यत् काल	'लृट शेषे च'
४ लङ् लकार	भूतकाल	'अनद्यतनेलङ्'
५ विधिलिङ् लकार	विधि (चाहिये अर्थों में)	विधिनिमन्त्रणामन्त्रणाऽधीष्ट-संप्रश्नप्रार्थनेषुलिङ्

(१५) **पुरुष एवं वचन**—लकारों में प्रयुक्त होने वाले रूपों को तीन पुरुषों और तीन वचनों में विभक्त किया गया है। जो निम्न हैं—

पुरुष—१. प्रथम पुरुष २. मध्यम पुरुष ३. उत्तम पुरुष।

वचन—१. एक वचन २. द्विवचन ३. बहुवचन।

आचार्य विनोद कुमार शास्त्री
(प्राचार्य)
गुरुकुल-लाक्षागृह-बरनावा
(बागपत)

तिङन्त
लघु सिद्धान्त कौमुदी
१. लट् लकार

भू धातोः (लट् लकार)—भू सत्तायाम्—होने अर्थ में।

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	भवति	भवतः	भवन्ति
मध्यम पुरुष	भवसि	भवथः	भवथ
उत्तम पुरुष	भवामि	भवावः	भवामः

(१) **भवति—**

भू + लट्—	**'वर्त्तमाने लट्'** से लट् लगाने पर
भू + ल्—	लट् के अनुवन्धों के हटाने पर
भू + तिप्	**तिप्तस्झि०**—सूत्र से भू + तिप् (प्रत्यय) कर्त्ता के प्र० पु० एक० की विवक्षा में
भू + शप् + तिप्—	**'कर्त्तरिशप्'** से शप्
भू + अ + तिप्—'	शप्' के अनुबन्ध हटाने पर व **'तिङ्शित्सार्वधातुकम्'** से सार्वधातुक संज्ञा करने पर
भो + अ + तिप्—	**'सार्वधातुकाऽऽर्धधातुकयोः'** सूत्र से इगन्त अंग भू को गुण हो जाता है अतः गुण करने पर
भव् + अ् + तिप्—	**एचोऽयवायावः से** ओ को अव्
भव् + अ + तिप्—	आदेश
भव् + अ + ति- -	**'हलन्त्यम्'** से प की इत्संज्ञा **'तस्य लोपः'** से लोप
भवति	रूप सिद्ध होता है।

नोट—(१) (शप्) अनुबन्धों में प् की इंत्संज्ञा **'हलन्त्यम्'** से, श की इत्संज्ञा **'लशक्वतद्धिते'** सूत्र से, और 'तस्यलोपः' से लोप हो जाता है।

(२) **विकरण**—आदेश और आगम से भिन्न जो प्रत्यय होते हैं उन्हें विकरण कहते हैं। इनका स्वतन्त्र अस्तित्व होता है।

---

३७४ वर्त्तमाने लट् ३/२/१२३

३८७ कर्त्तरि शप् ३/१/६८

३८८ सार्वधातुकाऽऽर्धधातुकयोः ७/३/८४

३७५ तिप्तस्झिसिप्थस्थमिप्वस्मस्० ३/४/७८

३ तस्य लोपः। १/३/९

२ अदर्शनं लोपः। १/१/६०

(२) भवतः—

भू + लट्—	'वर्तमाने लट्' से लट् लकार
भू + ल—	लट् के अनुबन्धों को हटाने पर
भू + तस् (प्रत्यय)	'तिप्तस्झि०' से कर्त्ता के प्र० पु० द्वि० की विवक्षा में तस् प्रत्यय
भू + शप् + तस्—	'कर्त्तरि शप्' से शप्
भू + अ + तस्—	शप् के अनुबन्धों का लोप—सार्वधातुक संज्ञा
भो + अ + तस्—	'सार्वधातु०' से इगन्त अंग भू को गुण
भव् + अ + तस्	'एचोऽयवायावः' से ओ को अव् आदेश
भव + तस्	मिलाने पर
भव + तर्	'ससजुषोरुः' से स् को रु (र)
	'खरवसानयोर्विसर्जनीयः' से र् को विसर्ग
भवतः	रूप सिद्ध होता है।

(३) भवन्ति—

भू + लट्—	'वर्तमानेलट्' से लट् लकार (भू)
भू + ल्—	लट् के अनुबन्धों का लोप होने पर
भू + झि	'तिप्तस्झि०' से प्र० पु०-बहु० की विवक्षा में लकार के स्थान में झि प्रत्यय
भू + शप् + झि—	'कर्त्तरिशप्' से शप्
भू + अ + झि—	शप् के अनुबन्धों को हटाने पर—सार्वधातुक संज्ञा
भो + अ + झि—	'सार्वधातुकार्ध०' से भू को गुण
भव् + अ + झि—	'एचोऽयवायावः' से ओ को अव् आदेश
भव + झि	मिलाने पर
भव + अन्ति	'झोऽन्तः' से झ को अन्त आदेश
भवन्ति	'अतोगुणे' से पररूप सन्धि
भवन्ति	रूप सिद्ध होता है।

---

२२ एचोऽयवायावः ६/१/७८
१०५ सस जुषोरुः/८/२/६६
खरवसानयोर्विसर्जनीयः
२७४ अतोगुणे ६/१/६७

(४) भवसि—

भू + लट्	'वर्तमाने लट्' से लट् लकार
भू + ल्—	लट् के अनुबन्धों का लोप होने पर
भू + सिप्	'तिप्तस्झि०' से म० पु० एक० की विवक्षा में लकार के स्थान पर सिप् प्रत्यय
भू + शप् + सिप्	'कर्त्तरिशप्' से शप्
भू + अ + सिप्	शप् के अनुबन्धों का लोप—सार्वधातुक संज्ञा
भो + अ + सिप्	'सार्वधातु०' से भू को गुण
भव् + अ + सिप्	'एचोऽयवायावः' से ओ को अव्
भव + सिप्	मिलाने पर
भव + सिप्	
भव + सि	'हलन्त्यम्' सिप् के प् की इत्संज्ञा
भव + सि	व लोप
भवसि	रूप सिद्ध हुआ।

(५) भवथः—

भू + लट्	'वर्तमाने लट्' से लट् लकार
भू + ल्	लट् के अनुबन्धों का लोप होने पर
भू + थस्	'तिप्तस्झि०' से म० पु० द्वि० की विवक्षा में लकार के स्थान पर थस्
भू + शप् + थस्	'कर्त्तरिशप्' से शप्
भू + शप् + थस्	शप् के अनुबन्धों का लोप होने पर—सार्वधातुक संज्ञा
भो + अ + थस्	'सार्वधातुकाऽऽर्ध०' से भू को गुण
भव् + अ + थस्	'एचोऽयवायावः' से ओ को अव
भव + थस्	मिलाने पर इस दशा में
भव + थस्	
भवथस्	
	'ससजुषोरुः' स् को रू (र्)
भवथर्—	'खरवसानयोः' से र् को विसर्ग आदेश
भवथः	रूप सिद्ध हुआ।

'अज्झीनं परेण संयोज्यम् — अच् से रहित व्यंजन को पर के साथ मिला दिया जाता है।

३८९ झोऽन्तः ७/१/३

१ हलन्त्यम् १/३/३

(६) भवथ—

भू + लट्	'वर्तमाने लट्' से लट् लकार
भू + ल्	लट् के अनुबन्धों का लोप होने पर
भू + थ	'तिप्तस्झि०' से म० पु० बहु० की विवक्षा में लकार के स्थान में थ प्रत्यय
भू + शप् + थ	'कर्तरिशप्' से शप्
भू + अ + थ	शप् का अनुबन्ध लोप होने पर— सार्वधातुक संज्ञा
भो + अ + थ	'सार्वधातु०' से इगन्त भू को गुण
भव् + अ + थ	'एचोऽयवायावः' से ओ को अव् आदेश
भव + थ	मिलाने पर
भव + थ	
भवथ	रूप सिद्ध होता है।

(७) भवामि—

भू + लट्	'वर्तमाने लट्' से लट् लकार
भू + ल्	लट् के अनुबन्धों का लोप होने पर
भू + मिप्	'तिप्तस्झि०' से उ० पु० एक० की विवक्षा में लकार के स्थान पर मिप् प्रत्यय
भू + शप् + मिप्	'कर्तरिशप्' से शप्
भू + अ + मिप्	शप् के अनुबन्धों का लोप-सार्वधातुक संज्ञा
भो + अ + मिप्	'सार्वधातु०' से इगन्त भू को गुण
भव् + अ + मिप्	'एचोऽयवायावः' से ओ को अव्
भव् + अ + मिप्	
भवा + मिप्	
भवामिप्	'अतोदीर्घो यञि' से भव के अदन्त अंग को दीर्घ
भवामि	'हलन्त्यम्' से प् की इत्संज्ञा व लोप
भवामि	रूप सिद्ध होता है।

---

३०१ अतो दीर्घो यञि ७/३/१०१

१३६ लशक्वतद्धिते १/३/८

(८) भवावः—

भू + लट्	'वर्त्तमाने लट्' से लट् लकार
भू + ल्	लट् के अनुबन्धों का लोप्
भू + वस्	'तिप्तस्झि०' से उ० पु० द्वि की विवक्षा में लकार के स्थान पर वस् प्रत्यय
भू + शप् + वस्	'कर्त्तरिशप्' से शप्
भू + अ + वस्	शप् के अनुबन्धों का लोप—सार्वधातुक संज्ञा
भो + अ + वस्	'सार्वधातु०' से भू को गुण
भव् + अ + वस्	'एचोऽयवायावः' से ओ को अव् भव + वस् मिलाने पर
भवा + वस्	'अतो दीर्घो यञि' से भव अदन्त को दीर्घ
भवा + वस्	
भवा + वर्	'ससजुषोरुः' से स को रु (र्)
भवावः	'खरवससानयोः' से र् को विसर्ग
भवावः	रूप सिद्ध होता है।

(९) भवामः—

भू + लट्	'वर्त्तमाने लट्' से लट् लकार
भू + ल्	लट् के अनुबन्धों का लोप्
भू + मस्	'तिप्तस्झि०' से उ० पु० बहु० की विवक्षा में लकार के स्थान पर मस् प्रत्यय
भू + शप् + मस्	'कर्त्तरिशप्' से शप्
भू + अ + मस्	शप् के अनुबन्धों का लोप—सार्वधातु० संज्ञा
भो + अ + मस्	'सार्वधातु०' से इगन्त भू को गुण
भव् + अ + मस्	'एचोऽयवायावः' से ओ को अव्
भव + मस्	'अतोदीर्घोयञि' से भव के अदन्त को दीर्घ
भवा + मस्	'ससजुषोरुः' से स को रु (र्)
	'खरवसानयोः' से र् को विसर्ग आदेश
भवामः	रूप सिद्ध होता है।

॥ इति लट्लकारः ॥

२. लोट् लकारः (भू)

भवतु	भवताम्	भवन्तु
भव	भवतम्	भवत
भवानि	भवाव	भवाम

(१) भवतु—

भू + लोट्—	**'लोट् च'** से लोट् लकार की विवक्षा में
भू + ल्	लोट् के अनुबन्ध लोप्
भू + तिप्	**'तिप्तस्झि०'** कर्त्ता के प्र० पु० एक० की विवक्षा में तिप् आदेश
भू + शप् + तिप्	'कर्तरि शप्' से शप्
भू + अ + तिप्	शप् के अनुबन्धों का लोप, सार्वधातुक संज्ञा
भो + अ + तिप्	**'सार्वधातुकार्द्धधातुकयो:'** से इगन्त अंग को गुण
भव + अ + तिप्	**'एचोऽयवायाव:'** से ओ को अव्
भव + ति	**'हलन्त्यम्'** से प् की इत्संज्ञा 'तस्य लोपः' से लोप
भव + तु	**'एरुः'** से ति के इ को उ आदेश मिलाने पर
भवतु	सिद्ध होता है।

---

४०९ लोट् च ३/३/१६२

४११ एरुः। ३/४/८६

(२) भवताम्—

भू + लोट्—	'लोट् च' से लोट् लकार
भू + ल्	लोट् के अनुबन्धों का लोप
भू + तस्	'तिप्तस्झि०' से कर्त्ता के प्र० पु० द्वि वचन की विवक्षा में तस्
भू + शप् + तस्	'कर्त्तरिशप्' से शप्
भू + अ + तस्	शप् का अनुबन्ध लोप, सार्वधातुक संज्ञा
भो + अ + तस्	'सार्वधातु०' से इगन्त अंग को गुण
भव् + अ + तस्	'एचोऽयवायावः' से ओ को अव् आदेश भवतस् मिलाने पर
भव + ताम्	'तस्थस्थमिपान्तान्तन्तामः' से तस् को ताम् आदेश
भवताम्	सिद्ध होता है।

(३) भवन्तु—

भू + लोट्	'लोट् च' सूत्र से लोट्लकार
भू + ल्	लोट् के अनुबन्धों का लोप
भू + झि	'तिप्तस्झि०' से कर्त्ता के प्र० पु० बहु० की विवक्षा में झि प्रत्यय
भू + शप् + झि	'कर्त्तरिशप्' से शप् सार्वधातुक संज्ञा
भो + अ + झि	'सार्वधातु०' से इगन्त अंग को गुण
भव् + अ + झि	'एचोऽयवायावः' से ओ को अव्
भव् + अ + झु	'एरुः' से इ को उ
भव + अन्तु	'झोऽन्तः' से झ को अन्त आदेश 'अतो गुणे' से पररूपैकादेश
भवन्तु	सिद्ध होता है।

---

४१४ तस्थस्थमिपां तां तंतामः। ३/४/१०१

(४) भव—

भू + लोट्	'लोट् च' सूत्र से लोट् लकार (भू धातु)
भू + ल्	लोट् के अनुबन्धों का लोप
भू + सिप्	'तिप्तस्झि०' से कर्त्ता के म० पु० एक० की विवक्षा में सिप् का आदेश
भू + शप् + सिप्	'कर्त्तरिशप्' से शप् सार्वधातुक संज्ञा
भू + अ + सिप्	'शप्' के अनुबन्धों का लोप
भो + अ + सिप्	'सार्वधातुः' से इगन्त भू का गुण
भव् + अ + सिप्	'एचोऽयवायावः' से ओ को अव् आदेश भव + सिप् मिलाने पर
गव + सिप्	'हलन्त्यम्' से प् की इत्संज्ञा व लोप
भत्र + सि	'सेर्ह्यपिच्च' से सि को हि आदेश
भव + हि	'अतो हेः' से हि का लोप
भव	सिद्ध होता है।

(५) भवतम्—

भू + लोट्	'लोट् च' सूत्र से लोट् लकार (भू धातुः)
भू + ल्	लोट् को अनुबन्धों का लोप होने पर
भू + थस्	'तिप्तस्झि०' से कर्त्ता के म० पु० द्वि० की विवक्षा में थस् प्रत्यय का आगम
भू + शप् + थस्	वर्त्तरिशप्' से शप् सार्वधातुक संज्ञा
भू + अ + थस्	'शप्' के अनुबन्ध लोप
भो + अ + थस्	'सार्वधातु०' से इगन्त अंग को गुण आदेश
भव् + अ + थस्	'एचोऽयवायावः' से ओ को अव् आदेश
भव् + अ + तम्	'तस्थस्थमिपांतांतंतामः' से थस् को तम् आदेश
भवतम्	सिद्ध रुप होता है।

---

४१५ सेर्ह्यपिच्च। ३/४/८७
४१६ अतो हेः। ६/४/०५

(६) भवत—

भू + लोट्	**'लोट् च'** सूत्र से लोट् लकार (भू धातुः)
भू + ल्	लोट् के अनुबन्धों का लोप होने पर
भू + थ	**'तिप्तस्झि०'** कर्त्ता के म० पु० बहु० की विवक्षा में थ प्रत्यय
भू + शप् + थ	**'कर्त्तरिशप्'** से शप् विकरण
भू + अ + थ	शप् के अनुबन्धों का लोप 'तिङ्शित्०' से सार्वधातुक संज्ञा
भो + अ + थ	**'सार्वधातु०'** से इगन्त भू को गुण
भव् + अ + थ	**'एचोऽयवायावः'** से ओ को अव् आदेश
भव + त	**'तस्थस्मिपां०'** से थ को त आदेश
भवत	रूप सिद्ध होता है।

(७) भवानि—

भू + लोट्	**'लोट् च'** सूत्र से लोट्लकार (भू धातुः)
भू + ल्	लोट् के अनुबन्ध लोप होने पर
भू + मिप्	**'तिप्तस्झि०'** से कर्त्ता के उ० पु० एक० की विवक्षा में मिप् प्रत्यय
भू + शप् + मिप्	**'कर्त्तरिशप्'** से 'शप्'
भू + अ + मिप्	'शप्' का अनुबन्ध लोपः 'तिङ्शित् सार्व० से सार्वधातुक संज्ञा
भो + अ + मिप्	**'सार्वधातु०'** से इगन्त अंग को गुण
भव् + अ + मिप्	**'एचोऽयवायावः'** से ओ को अव् आदेश
भव + मि	**'हलन्त्यम्'** से प् की इत्संज्ञा व लोप
भव + नि	**'मेर्निः'** से मि को नि
भव + आट् + नि	**'आडुत्तमस्य पिच्च'** से आट् का आगम
भवा + नि	**'हलन्त्यम्'** से इत्संज्ञा व लोप
	अकः सवर्णे दीर्घः से दीर्घ एकादेश
भवानि	रूप सिद्ध होता है।

---

४१७ मेर्निः। ३/४/८९

४१८ आडुत्तमस्य पिच्च। ३/४/९२

४२ अकः सवर्णे दीर्घः। ६/१/१०१ ॥

(८) भवाव—

भू + लोट्	'लोट् च' सूत्र से लोट् लकार (भू धातु)
भू + ल	लोट् का अनुबन्ध लोप होने पर
भू + वस्	'तिप्तस्झि०' से कर्त्ता के उ० पु० द्वि० की विवक्षा में वस् का आगम
भू + शप् + वस्	'कर्त्तरि शप्' से शप्
भू + अ + वस्	'शप्' के अनुबन्ध लोप होरे पर तिङ्शित्' से सार्वधातुक संज्ञा
भो + अ + वस्	'सार्वधातु०' से इगन्त भू को गुणादेश
भव् + अ + वस्	'एचोऽयवायावः' से ओ को अव् आदेश
भव् + अ + व	'नित्यङित्त' से वस् के स का लोप
भव + आट् + व	'आडुतमस्य पिच्च' से आट् का आगम
भव + आ + व	'हलन्त्यम्' से ट् की इत्संज्ञा व लोप अकः सवर्णेदीर्घः से सवर्णदीर्घ एकादेश
भवाव	रूप सिद्ध होता है।

(९) भवाम—

भू + लोट्	'लोट् च' सूत्र से लोट् लकार (भू धातु)
भू + ल्	लोट् का अनुबन्ध लोप होने पर
भू + मस्	'तिप्तस्झि०' से कर्त्ता के उ० पु० बहु० की विवक्षा में मस्
भू + शप् + मस्	'कर्त्तरिशप्' से शप्
भू + अ + मस्	'शप्' का अनुबन्ध लोप 'तिङ्शित्०' से सार्वधातुक संज्ञा
भो + अ + मस्	'सार्वधातु०' से इगन्त भू को गुण
भव् + अ + मस्	'एचोऽयवायावः' से ओ को अव् आदेश
भव + म	'नित्यंङित्तः' से मस् के स् का लोप
भव + आट् + म	'आडुत्तमस्य पिच्च' से आट् का आगम
भवा + म	'चुटू' ट् की इत्संज्ञा व लोप, अकः सवर्णे दीर्घः एकादेश
भवाम	रूप सिद्ध होता है।

॥ इति लोट्लकारः ॥

---

४२१ नित्यंङित्तः। ३/४/९

३. लृट् लकार

भविष्यति	भविष्यतः	भविष्यन्ति
भविष्यसि	भविष्यथः	भविष्यथ:
भविष्यामि	भविष्यावः	भविष्यामः

(१) भविष्यति–

भू + लृट्	**'लृट् शेषे च'** से लृट लकार (भू)
भू + ल्	लृट् के अनुबन्धों का लोप
भू + तिप्	**'तिप्तस्झि०'** से कर्त्ता के प्र० पु० एक० की विवक्षा में तिप् प्रत्यय का आगम
भू + स्य + तिप्	**'स्यतासी लृलुटोः'** से 'स्य' प्रत्यय आर्धधातुकं शेषः से स्य प्रत्यय की आर्द्धधातुक संज्ञा करने पर
भू + इ + स्य + तिप्	**'आर्द्धधातुकस्येड्वलादेः'** से इट् का आगम
भो + इस्य + तिप्	**'सार्वधातु०'** से इगन्त अंग को गुण
भव् + इस्य + तिप्	**'एचोऽयवायावः'** ओ को अव् आदेश
भव् + इस्य + तिप्	**'आदेश प्रत्ययोः'** से स को ष् आदेश
भव् + इष्य + ति	**'हलन्त्यम्'** से प् की इत्संज्ञा व लोप
भविष्यति	रूप सिद्ध होता है।

---

४०८ लृट शेषे च। ३/३/१३

४०३ स्यतासी लृलुटोः। ३/१/३३

४०१ आर्द्ध धातु कस्येड्वलादेः। ७/२/३५

१५० आदेश प्रत्ययोः। ८/३/५९

४०४ आर्द्धधातुकं शेषः। ३/१/११४

१२९ चुटू। १/३/७

(२) भविष्यतः—

भू + लट्	'लृट शेषे च' लृट् लकार (भू धातुः)
भू + ल्	लृट् के अनुबन्धों का लोप
भू + तस्	'तिप्तस्झि०' से कर्त्ता के प्र० पु० द्वि० की विवक्षा में तस् आदेश
भू + स्य + तस्	'स्यतासीलृलुटोः' से स्य प्रत्यय आर्धधातुक संज्ञा होने से
भू + इस्य + तस्	'आर्द्धधातुकस्येड्वलादेः' से इट् का आगम
भो + इस्य + तस्	'सार्वधातु०' से इगन्त अंग भू को गुण
भव् + इस्य + तस्	'एचोऽयवायावः' से ओ को अव् आदेश
भव् + इस्य + तस्	'आदेश प्रत्ययोः' से स् को ष् आदेश
भविष्यतः	'ससजुषोरुः' से स् को रु, अनुबन्धलोप
भविष्यतः	'खरवसानयोः' से र् को विसर्ग
भविष्यतः	रूप सिद्ध होता है।

(३) भविष्यन्ति—

भू + लृट्	'लृट् शेषे च' सूत्र से लृट् लकार (भू धातुः)
भू + ल्	लृट् के अनुबन्धों का लोप
भू + झि	'तिप्तस्झि०' कर्त्ता के प्र० पु० बहु० की विवक्षा में झि प्रत्यय का आगम
भू + स्य + झि	'स्यतासी लृलुटोः' से स्य
भू + इस्य + झि	'आर्द्धधातुकस्येड्वलादेः' से इट् का आगम
भो + इस्य + झि	'सार्वधातु०' से इगन्त को गुण
भव् + इस्य + झि	'एचोऽयवायावः' से ओ को अव् आदेश
भवि + स्य + झि	'आदेश प्रत्ययोः' से स् को ष्
भविष्य + अन्ति	'झोऽन्तः' से झि को अन्त आदेश 'अतो गुणे' इस सूत्र से पररूप एकादेश
भविष्यन्ति	रूप सिद्ध होता है।

(४) भविष्यसि—

भू + लृट्	'लृट् शेषे च' से लृट् लकार (भू धातुः)
भू + ल्	लृट् के अनुबन्धों का लोप होने पर
भू + सिप्	'तिप्तस्झि०' से कर्त्ता म० पु० एक० की विवक्षा में ल् के स्थान पर सिप् आदेश
भू + स्य + सिप्	'स्यतासीलृलुटोः' से स्य प्रत्यय आर्द्धधातुक संज्ञा होने से
भू + इस्य + सिप्	'आर्द्धधातुकस्येड्वलादेः' से इट् का आगम
भो + इस्य + सिप्	'सार्वधातु०' से इगन्त अंग को गुणादेश
भव् + इस्य + सिप्	'एचोऽयवायावः' से ओ को अव्
भवि + ष्य + सिप्	'आदेश प्रत्यययोः' से स् को ष्
भवि + स्य + सि	'हलन्त्यम्' से प् की इत्संज्ञा व लोप
भविष्यसि	रूप सिद्ध होता है।

(५) भविष्यथः—

भू + लृट्	'लृट् शेषे च' से लृट् लकार
भू + ल्	लृट् के अनुबन्धों का लोप
भू + थस्	'तिप्तस्झि०' कर्त्ता के म० पु० द्वि० की विवक्षा में ल् के स्थान पर थस् आदेश
भू + स्य + थस्	'स्यतासी लृलुटोः' से स्य प्रत्यय
भू + इस्य + थस्	'आर्द्धधातुकस्येड्वलादेः' से इट् का आगम
भो + इस्य + थस्	'सार्वधातुका:०' से इगन्त अंग को गुण
भव् + इस्य + थस्	'एचोऽयवायावः' से ओ अव् आदेश
भवि + ष्य + थस्	'आदेश प्रत्यययोः' से स् को ष् आदेश
भवि + ष्य + थर्	'ससजुषो रुः' से स् को रु (र)
भविष्यथः	मिलाने 'खरवसानयोः' से र को विसर्ग
भविष्यथः	रूप सिद्ध होता है।

(६) भविष्यथ—

भू + लृट्	'लृट् शेषे च' सूत्र से लृट लकार (भू धातुः)
भू + ल्	लृट् के अनुबन्धों का लोप
भू + थ	'तिप्तस्झि०' से कर्त्ता के म० पु० बहु० की विवक्षा में लकार के स्थान में थ आदेश
भू + स्य + थ	'स्यतासी लृलुटोः' से स्य प्रत्यय
भू + इस्य + थ	'आर्द्धधातुकस्येड्वलादेः' से इट् का आगम
भो + इस्य + थ	'सार्वधातु०' से इगन्त अंङ्ग को गुण
भव् + इस्य + थ	'एचोऽयवायावः' से ओ को अव् आदेश
भवि + ष्य + थ	'आदेश प्रत्ययोः' से स् को ष् आदेश
भविष्यथ	रूप सिद्ध होता है।

(७) भविष्यामि—

भू + लृट्	'लृट् शेषे च' से लृट् लकार (भू धातुः)
भू + ल्	लृट के अनुबन्धों का लोप
भू + मिप्	'तिप्तस्झि०' से कर्त्ता के उ० पु० एक० की विवक्षा में मिप् आदेश
भू + स्य + मिप्	'स्यतासी लृलुटोः' से स्य प्रत्यय
भू + इस्य + मिप्	'आर्द्धधातुकस्येड्वलादेः' से इट् का आगम
भो + इस्य + मिप्	'सार्वधातु०' से इगन्त अंग को गुण
भव् + इस्य + मिप्	'एचोऽयवायावः' से ओ को अव् आदेश
भवि + इष्य + मिप्	'आदेश प्रत्ययोः' से स् को ष्
भविष्या + मिप्	'अतोदीर्घो यञि' से अदन्त अंग को दीर्घ
भविष्यामि	'हलन्त्यम्' से प् की इत्संज्ञा व लोप
भविष्यामि	रूप सिद्ध होता है।

(८) **भविष्यावः—**

भू + लृट्	**'लृट् शेषे च'** से लृट् लकार
भू + ल्	लृट् के अनुबन्धों का लोप
भू + वस्	**'तिप्तस्झि०'** से कर्त्ता उ० पु० द्वि० को विवक्षा में ल के स्थान पर वस् आदेश
भू + स्य + वस्	**'स्यतासी लृलुटोः'** से स्य प्रत्यय
भू + इस्य + वस्	**'आर्द्धधातुकस्येड्वलोदः'** से इट् का आगम
भो + इस्य + वस्	**'सार्वधातु०'** से इगन्त अंग का गुणादेश
भव् + इस्य + वस्	**'एचोऽयवायावः'** से ओ को अव् आदेश
भवि + ष्य + वस्	**'आदेश प्रत्यययोः'** से स् को ष् मिलाने पर
भविष्या + वस्	**'अतो दीर्घो यञि'** से अदन्त अंग को दीर्घ
भविष्यावस्	**'न विभक्तौ तुस्मा'** से निषेध
भविष्यावर्	**'ससजुषोरुः'** से स को रु (र्)
भविष्यावः	**'खरवसानयोः'** से र को विसर्गादेश
भविष्यावः	रूप सिद्ध होता है।

(९) **भविष्यामः—**

भू + लृट्	**'लृट् शेषे च'** से लृट् लकार
भू + ल्	लृट् के अनुबन्धों का लोप
भू + मस्	**'तिप्तस्झि०'** से कर्त्ता के उ० पु० बहु० की विवक्षा में मस् प्रत्यय
भू + स्य + मस्	**'स्यतासी लृलुटोः'** से स्य प्रत्यय
भू + इस्य + मस्	**'आर्द्धधातुकस्येड्वलादेः'** से इट् का आगम
भो + इस्य + मस्	**'सार्वधातु०'** से इंगन्त अंग को गुणादेश
भव् + इस्य + मस्	**'एचोऽयवायावः'** से ओ को अव् आदेश
भवि + ष्य + मस्	**'आदेश प्रत्यययोः'** से स् को ष्
भविष्या + मस्	**'अतोदीर्घो यञि'** से अदन्त को दीर्घादेश
भविष्या + मस्	**'न विभक्तौ तुस्मा'** से स् की इत्संज्ञा व निषेध
भविष्यामर्	**'स सजुषो रुः'** से स् को रु (र), अनुबन्ध लोप
भविष्यामः	**'खरवसानयोः'** से र को विसर्गादेश
भविष्यामः	रूप सिद्ध होता है।

॥ इति लृट्लकार ॥

---

१३१ न विभक्तौ तुस्माः। १/३/४

४. लङ् लकार

अभवत्	अभवताम्	अभवन्
अभवः	अभवतम्	अभवत
अभवम्	अभवाव	अभवाम

(१) अभवत्—

भू + लङ्	'अनद्यतने लङ्' से लङ् लकार (भू धातुः)
अभू + लङ्	'लुङ्लङ्लृङ्क्ष्वडुदात्तः' से अट् आगम
अभू + ल्	अट् के ट् की इत्संज्ञा व लोप लङ् के अनुबन्धों का लोप
अभू + तिप्	'तिप्तस्झि०' से कर्त्ता के प्र० पु० एक० की विवक्षा में तिप् प्रत्यय
अभू + शप् + तिप्	'कर्त्तरिशप्' से शप्, अनुबन्ध लोप व सार्वधातुक संज्ञा
अभू + अ + तिप्	
अभो + अ + तिप्	'सार्वधातु०' से इगन्त भू को गुणादेश
अभव् + अ + ति	'एचोऽयवायावः' से ओ को अव्
अभव + ति	'हलन्त्यम्' से प् की इत्संज्ञा व लोप
अभव + त्	'इतश्च' से इ का लोप
अभवत्	मिलाने पर रूप सिद्ध होता है।

---

४२२ अनद्यतने। ३/२/१११

४२३ लुङ्लङ्लृङ्क्ष्वडुदात्तः। ६/४/७१

१०५ ८/२/६६

४२४ इतश्च। ३/४/१००

(२) अभवताम्—

भू + लङ्	**'अनद्यतने लङ्'** से लङ् लकार (भू धातु:)
अभू + लङ्	**'लुङ्लङ्०'** से अट् का आगम अट् के ट् की इत्संज्ञा व लोप
अभू + ल्	**'लङ्'** के अनुबन्धों का लोप होने पर
अभू + तस्	**'तिप्तस्झि०'** से कर्त्ता के प्र० पु० द्वि० की विवक्षा में
अभू + शप् + तस्	**'कर्त्तरिशप्'** से शप् व सार्वधातुक संज्ञा
अभू + अ + तस्	**'शप्'** का अनुबन्ध लोप्
अभो + अ + तस्	**'सार्वधातु०'** से इगन्त भू को गुण
अभव् + अ + तस्	**'एचोऽयवायाव:'** से ओ को अव् अभवतस् मिलाने पर
अभव + ताम्	**'तस्थस्थमिपां तां तं ताम:'** से तस् को ताम् आदेश।
अभवताम्	रूप सिद्ध होता है।

(३) अभवन्—

भू + लङ्	**'अनद्यतने लङ्'** से लङ् लकार
अभू + लङ्	**'लुङ् लङ्०'** से अट् का आगम, अट् के ट् की इत्संज्ञा व लोप
अभू + ल्	लङ् के अनुबन्धों का लोप
अभू + झि	**'तिप्तस्झि०'** से कर्त्ता के प्र० पु० बहु० की लङ् लकार के स्थान पर विवक्षा में झि
अभू + शप् + झि	**'कर्त्तरिशप्'** से शप्
अभू + अ + झि	**'शप्'** का अनुबन्ध लोप व सार्वधातुक संज्ञा
अभो + अ + झि	**'सार्वधातु०'** से इगन्त भू को गुण
अभव् + अ + झि	**'एचोऽयवायाव:'** से ओ को अव् अभवझि।
अभव + झ्	**'इतश्च'** से इ का लोप
अभव + अन्त्	**'झोऽन्त:'** से झ को अन्त आदेश
अभवन्त्	**'अतोगुणे'** से पररूप सन्धि
अभवन्	**'संयोगान्तस्य लोप:'** से त् का लोप
अभवन्	यह रूप सिद्ध होता है।

---

२७४ अतो गुणे। ६/१/६७ — २० संयोगान्तस्य लोपः। ८/२/२३

४२२—३/२/१११ — ३८७—३/१/६८ — ३७५—३/४/८७

(४) अभवः—

भू + लङ्	'अनद्यतने लङ्' से लङ लकार
अभू + लङ्	'लुङ्लङ्०' से अट् का आगम, लट् के ट् की इत्संज्ञा व लोप
अभू + ल्	'लङ्' के अनुबन्धों का लोप
अभू + सिप्	'तिप्तस्झि०' से कर्त्ता के म० पु० एक० की विवक्षा में सिप्
अभू + शप् + सिप्	'कर्त्तरिशप्' से शप्
अभू + अ + सिप्	शप् के अनुबन्धों का लोप व सार्वधातुक संज्ञा
अभो + अ + सिप्	'सार्वधातु०' से इगन्त भू को गुणादेश
अभव् + अ + सिप्	'एचोऽयवायावः' ओ को अव् अभव + सिप् मिलाने पर
अभव + सि	'हलन्त्यम्' से सिप् के प् की इत्संज्ञा लोप
अभव + स्	'इतश्च' से इ का लोप अभवस् मिलाने पर
अभव + र्	'ससजुषो रुः' स को रु (र्) आदेश
अभवः	'खरवसानयोः०' से र् को विसर्ग
अभवः	रूप सिद्ध होता है।

(५) अभवतम्—

भू + लङ्	'अनद्यतने लङ्' से लङ् लकार (भू धातुः)
अभू + लङ्	'लुङ्लङ्' से अट् का आगम, अट् के ट् की इत्संज्ञा व लोप
अभू + ल्	'लङ्' के अनुबन्धों का लोप
अभू + थस्	'तिप्तस्झि०' से कर्त्ता के म० पु० द्वि० की विवक्षा में लङ् लकार के स्थान पर थस् प्रत्यय
अभू + शप् + थस्	'कर्त्तरिशप्' से शप्
अभू + अ + थस्	'शप्' के अनुबन्धों का लोप
अभो + अ + थस्	'सार्वधातु०' से इगन्त भू को गुण
अभव् + अ + थस्	'एचोऽयवायावः' से ओ को अव् आदेश अभव + थस मिलाने पर
अभवतम्	'तस्थस्मिपांः' से थस् के स्थान में तम् आदेश
अभवतम्	रूप सिद्ध होता है।

(६) अभवत—

भू + लङ्	'अनद्यतनेलङ्' से लङ्लकार (भू धातुः)
अभू + लङ्	'लुङ्लङ्०' से अट् का आगम, अट् के ट् की इत्संज्ञा व लोप
अभू + ल्	लङ् के अनुबन्धों का लोप
अभू + थ	'तिप्तस्झि०' से कर्त्ता म० पु० बहु० की विवक्षा में लङ् लकार के स्थान पर थ प्रत्यय
अभू + शप् + थ	'कर्त्तरि शप्' से शप्
अभू + अ + थ	शप् का अनुबन्ध लोप व सार्वधातुक संज्ञा
अभो + अ + थ	'सार्वधातु०' से इगन्त भू को गुणादेश
अभव् + अ + थ	'एचोऽयवायावः' से ओ को अव्
अभव + थ	मिलाने पर
अभव + त	'तस्थस्मिपां०' से थ को त आदेश
अभवत	रूप सिद्ध होता है।

(७) अभवम्—

भू + लङ्	'अनद्यतने लङ्' से लङ् लकार (भू धातुः)
अभू + लङ्	'लुङ्लङ्०' से अट् का आगम, अट् के ट् की इत्संज्ञा व लोप
अभू + ल्	लङ् के अनुबन्धों का लोप
अभू + मिप्	'तिप्तस्झि०' से कर्त्ता उ० पु० एक० की विवक्षा में लङ् लकार के स्थान पर मिप् प्रत्यय
अभू + शप् + मिप्	'कर्त्तरिशप्' से शप्
अभू + अ + मिप्	शप् के अनुबन्धों का लोप व सार्वधातुक संज्ञा
अभो + अ + मिप्	'सार्वधातु०' से इगन्त भू को गुण
अभव् + अ + मिप्	'एचोऽयवायावः' से ओ को अव्
अभव + मिप्	मिलाने पर
अभव् + अम्	'तस्थस्मिपां०' से मिप् को अम्
अभवम्	रूप सिद्ध होता है।

(८) अभवाव—

भू + लङ्	'अनद्यतने लङ्' से लङ् लकार (भू धातुः)
अभू + लङ्	'लुङ् लङ्०' से अट् का आगम, अट् के ट् की इत्संज्ञा व लोप
अभू + ल्	'लङ्' के अनुबन्ध का लोप
अभू + वस्	'तिप्तस्झि०' से कर्त्ता के उ० म० द्वि० की विवक्षा में लङ् लकार के स्थान पर वस् प्रत्यय
अभू + शप् + वस्	'कर्त्तरिशप्' से शप्
अभू + अ + वस्	शप् के अनुबन्धों का लोप व सार्वधातुक संज्ञा
अभो + अ + वस्	'सार्वधातु०' से इगन्त भू को गुण
अभव् + अ + वस्	'एचोऽयवायावः' ओ को अव्
	अभव + वस् मिलाने पर
अभवा + वस्	'अतोदीर्घोयञि' से अदन्त अंग को दीर्घ
अभवा + व	'नित्यङ्गितः' से वस् के स् का लोप
अभवाव	मिलाने पर
अभवाव	रूप सिद्ध होता है।

(९) अभवाम—

भू + लङ्	'अनद्यतने लङ्' से लङ् लकार (भू धातुः)
अभू + लङ्	'लुङ् लङ्०' से अट् का आगम, अट् के ट् की इत्संज्ञा व लोप
अभू + मस्	'तिप्तस्झि०' से कर्त्ता उत्तम पु० बहु० की विवक्षा में मस् का
अभू + शप् + मस्	'कर्त्तरि शप्' से शप्
अभू + अ + मस्	शप् के अनुबन्धों का लोप व सार्वधातुक संज्ञा
अभो + अ + मस्	'सार्वधातु०' से इगन्त अंग को गुणादेश
अभव् + अ + मस्	'एचोऽयवायावः' से ओ को अव्
	अभव + मस् मिलाने पर
अभवा + मस्	'अतोदीर्घोयञि' से अदन्त अंग को दीर्घ
अभवा + म	'नित्यंङ्गितः' से मस् के स् का लोप
अभवाम	रूप सिद्ध होता है।

॥ इति लङ् ॥

५. विधिलिङ् लकार

भवेत्	भवेताम्	भवेयुः
भवेः	भवेतम्	भवेत
भवेयम्	भवेव	भवेम ॥

(१) भवेत्–

भू + वि० लिङ्	**'विधिनिमन्त्रणा मन्त्रणा धीष्टसंप्रश्न प्रार्थनेषु लिङ्'** से वि० लिङ् लकार (भू)
भू + ल्	'लिङ्' के अनुबन्धों का लोप होने पर
भू + तिप्	**'तिप्तस्झि०'** से कर्त्ता के प्र० पु० एक० की विवक्षा में तिप् प्रत्यय
भू + शप् + तिप्	**'कर्त्तरिशप्'** से शप्
भू + अ + तिप्	'शप्' के अनुबन्धों का लोप व सार्वधातुक संज्ञा
भो + अ + तिप्	**'सार्वधातु०'** से इगन्त भू को गुणादेश
भव् + अ + तिप्	**'एचोऽयवायावः'** से ओ को अव् आदेश भव + तिप् मिलाने पर **'हलन्त्यम्'** से प् की इत्संज्ञा 'तस्य लोपः' से लोप
भव + त्	**'इतश्च'** से ङित् लकारों में तिप् के इ का लोप होने पर
भव + यासुट् + त्	**'यासुट्परस्मैपदेषुदात्तोङिच्च'** से यासुट् (यास्) आगम के अनुबन्धों का लोप होने पर
भव + यास् + त्	'लिङः सलोपोऽनन्त्यस्य' से यास् के स् का लोप होने पर
भव + इय् + त्	**'अतोयेयः'** से अदन्त भव् के परे या को इय् आदेश
भव + इ + त्	**'लोपोव्योर्वलि'** से इय् के य् को लोप
भवेत्	'आदगुणः' से गुण सन्धि करने पर (भव के अ एवं परवर्ती इ के स्थान पर ए गुण हो जाता है)
भवेत्	रूप सिद्ध होता है ।

---

४२५ विधिनिमन्त्रणा मन्त्रणा धीष्टसंप्रश्नप्रार्थनेषु लिङ् । ३/३/१६१

४२६ यासुट्परस्मैपदेषु दात्तौ ङिच्च । ३/४/०३

४२७ 'लिङ् सलोपोऽनन्त्यस्य' । ७/२/७९

४२८ अतोयेयः । ७/२/८०

४२९ लोपोव्योर्वलि । ६/१/६६

(२) भवेताम्—

भू + लिङ्	'विधिनिमन्त्रणा मन्त्रणा धीष्टसंप्रश्न प्रार्थनेषु०' से लिङ् लकार
भू + ल्	लिङ् के अनुबन्धों का लोप
भू + तस्	'तिप्तस्झि०' से कर्त्ता प्र० पु० द्वि० की विवक्षा में
भू + शप् + तस्	'कर्त्तरि शप्' से शप्
भू + अ + तस्	'शप् के अनुबन्धों का लोप व सार्वधातुक संज्ञा
भो + अ + तस्	'सार्वधातु०' से इगन्त भू को गुण
भव् + अ + तस्	'एचोऽयवायावः' से ओ को अव्
	भव + तस् मिलाने पर
भव + ताम्	'तस्थस्मिपां०' से तस् को ताम्
भव + यास् + ताम्	'यासुट् परस्मैपदेषूदात्तोङिच्च' से यासुट् का आगम, अनुबन्ध लोप होने पर
भव + या + ताम्	पूर्ववत् स् का लोप होने पर
भव् + इय् + ताम्	'अतोयेयः' से या को इय् आदेश
भव + इ + ताम्	'लोपोव्योर्वलि' से य् का लोप
भवेताम्	गुण सन्धि करने पर
भवेताम्	रूप सिद्ध होता है।

(३) भवेयुः—

भू + लिङ्	'विधिनिमन्त्रणा०' से लिङ् लकार (भू)
भू + ल्	लिङ् के अनुबन्धों का लोप
भू + झि	'तिप्तस्झि०' से प्र० पु० बहु० की विवक्षा में झि
भू + शप् + झि	'कर्त्तरिशप्' से शप्
भू + अ + झि	'शप्' के अनुबन्धों का लोप व सार्वधातुक संज्ञा
भो + अ + झि	'सार्वधातु०' से इगन्त भू को गुण
भव् + अ + झि	'एचोऽयवायावः' से ओ को अव् आदेश
भव + झि	मिलाने पर
भव + जुस्	'झेर्जुस्' से वि० लिङ् में झि को जुस्

४३० झेर्जुस्। ३/४/१८०

भव + ठस्	'चुटू' से (ज् की इत्संज्ञा) 'न विभक्तौतुस्मा' से स् की इत्संज्ञा का निषेध
भव + यास् + उस्	'यासुट् परस्मैपदेष्वदात्तोङिच्च' से यासुट् का आगम अनुबन्धों का लोप होने पर
भव + या + उस्	'लिङ् सलोपोऽनन्त्यस्य' से यास् के स् का लोप
भव + इय् + उस्	'अतोतेयः' से या को इय् आदेश
	आद्गुणः से गुण सन्धि करने पर
	भवेयुस्
भवेयुर्	'ससजुषो रुः' से स् को रु (र)
भवेयुः	'खरवसानयोः' से र को विसर्गादेश
भवेयुः	यह रूप सिद्ध होता है।

(४) भवेः—

भू + लिङ्	'विधिनिमन्त्रणा०' से वि० लिङ् लकार (भू)
भू + ल्	लिङ् के अनुबन्धों का लोप
भू + स्	'तिप्तस्झि०' सूत्र से म० पु० एक० की विवक्षा में सिप् 'प्' अनुबन्धों का लोप तथा इ का 'इतश्च' से लोप करने पर
भू + शप् + स्	'कर्त्तरि शप्' से शप्
भू + अ + स्	शप् के अनुबन्धों का लोप व सार्वधातुक संज्ञा
भो + अ + स्	'सार्वधातु०' से इगन्त अंग को गुण
भव् + अ + स्	'एचोऽयवायावः' से ओ को अव्
भव + सि	मिलाने पर
भव + स्	'यासुट् परस्मैपदेषूदात्तोङिच्च' से यासुट् का आगम व अनुबन्धों का लोप करने पर
भव + या + स्	व 'लिङ्सलोपो०' से स् का लोप
भव + इय् + स्	'अतोयेयः' से या को इय् आदेश
भव + इ + स्	'लोपोव्योर्वलि' से य का लोप
भवेस्	भवेस् (गुण सन्धि करने पर)
भेवर्	'ससजुषोरुः' से स् को रु (र)
भवेः	'खरवसानयोः' से र को विसर्ग
भवेः	रूप सिद्ध होता है।

(५) भवेतम्—

भू + वि० लिङ्	'विधि निमन्त्रणा०' से लिङ् लकार (भू)
भू + ल्	लिङ् के अनुबन्धों का लोप
भू + थस्	'तिप्तस्झि०' कर्त्ता के म० पु० द्वि० की विवक्षा में थस्
भव् + शप् + थस्	'कर्त्तरिशप्' से शप्
भू + अ + थस्	शप् के अनुबन्धों का लोप व सार्वधातुक संज्ञा
भो + अ + थस्	'सार्वधातु०' से इगन्त भू को गुण
भव् + अ + थस्	'एचोऽयवायाव:' से ओ को अव् भवथस् मिलाने पर
भव + तम्	'तस्थसमिपां०' से थस् को तम्
भव + यास् + तम्	'यासुट् परस्मै०' से यासुट् का आगम व
भव + या + तम्	अनुबन्धों का लोप
भव + इय् + तम्	'अतोयेय:' से या को इय्
भव + इ + तम्	'लोपोव्योर्वलि' से य् का लोप गुण सन्धि करने पर
भवेतम्	रूप सिद्ध होता है।

(६) भवेत—

भू + लिङ्	'विधिनिमन्त्रणा०' से लिङ् लकार (भू)
भू + ल्	लिङ् के अनुबन्धों का लोप
भू + थ	'तिप्तस्झि०' से कर्त्ता म० पु० बहु० की विवक्षा में थ
भू + शप् + थ	'कर्त्तरिशप्' से शप्
भू + अ + थ	शप् के अनुबन्धों का लोप व सार्वधातुक संज्ञा
भो + अ + थ	'सार्वधातु०' से इगन्त भू को गुण
भव् + अ + थ	'एचोऽयवायाव:' से ओ को अव् भव थ मिलाने पर
भव + त	'तस्थस्थमिपां०' से थ को त आदेश
भव + यास् + त	'यासुट्परस्मै०' से यासुट् का आगम व
भव + य + त	अनुबन्धों का लोप
भव + इय् + त	'अतोयेय:' से या को इय्
भव + इ + त	'लोपोव्यार्वलि' य् का लोप
भवेत	गुण सन्धि करने पर
भवेत	रूप सिद्ध होता है।

(७) **भवेयम्—**

भू + लिङ्	**'विधिनिमन्त्रणा०'** से लिङ् लकार (भू)
भू + ल्	लिङ् के अनुबन्धों का लोप
भू + मिप्	**'तिप्तस्झि०'** से कर्त्ता उ० पु० एक० की विवक्षा में मिप् का आगम
भू + शप् + मिप्	**'कर्त्तरि शप्'** से शप्
भू + अ + मिप्	शप् के अनुबन्धों का लोप व सार्वधातुक संज्ञा
भो + अ + मिप्	**'सार्वधातु०'** से इगन्त अंग को गुण
भव् + अ + मिप्	**'एचोऽयवायावः'** से ओ को अव्
भव + मिप्	मिलाने पर
भव + अम्	**'तस्थस्मिपां०'** से मिप् को अम्
भव + यास् + अम्	**'यासुट्परस्मै०'** से यासुट् का आगम व
भव + या + अम्	अनुबन्धों का लोप
भव + इय + अम्	**'अतोयेयः'** से या के स्थान पर इय्
भव + इयम	गुण सन्धि करने पर
भेवयम्	रूप सिद्ध होता है।

(८) **भवेव—**

भू + लिङ्	**'विधिनिमन्त्रणा०'** से लिङ् लकार (भू)
भू + ल्	लिङ् के अनुबन्धों का लोप
भू + वस्	**'तिप्तस्झि०'** से उ० पु० द्वि० की विवक्षा में वस् का आगम
भू + शप् + वस्	**'कर्त्तरिशप्'** से शप्
भू + अ + वस्	'शप् के अनुबन्धों का लोप व सार्वधातुक संज्ञा
भो + अ + वस्	**'सार्वधातु०'** से इगन्त भू को गुण
भव् + अ + वस्	**'एचोऽयवायावः'** से ओ को अव्
भव + वस्	मिलाने पर
भव + व	**'नित्यङितः'** से स् का लोप
भव + यासुट् + व	**'यासुटपरस्मै०'** से यासुट् (यास्) का आगम व
भव + या + व	अनुबन्धों का लोप

भव + इय् + व	'अतोयेयः' से या को इय्
भव + इ + व	'लोपोव्योर्वलि' से य का लोप
भवेव	गुण सन्धि करने पर
भवेव	रूप सिद्ध होता है।

(९) भवेम—

भू + लिङ्	'विधिनिमन्त्रणा०' से लिङ् लकार (भू)
भू + ल्	लिङ् के अनुबन्धों का लोप
भू + मस्	'तिप्तस्झि०' से कर्त्ता के उ० म० बहु० की विवक्षा में लकार के स्थान पर मस् प्रत्यय
भू + शप् + मस्	'कर्त्तरि शप्' से शप्
भू + अ + मस्	'शप्' के अनुबन्धों का लोप व सार्वधातुक संज्ञा
भो + अ + मस्	'सार्वधातु०' से इगन्त भू को गुण
भव् + अ + मस्	'एचोऽयवायावः' से ओ को अव्
	भव + मस् मिलाने पर
भव + म	'नित्यङित:' से स् का लोप
भव + यासुट् + म	'यासुट्परस्मै०' से यासुट् का आगम व
भव + या + म	अनुबन्धों का लोप
भव + इय् + म	'अतोयेयः' से या को इय्
भव + इ + म	'लोपोव्योर्वलि' से य् का लोप
भवेम	गुण सन्धि करने पर
भवेम	रूप सद्धि होता है।

॥ इति विधिलिङ्लकारः ॥

इति तिङन्त-प्रक्रिया

अथ समास प्रकरणम्

सामासिक पद

सम्-पूर्वक अस् धातु से घञ् प्रत्यय होने पर समास शब्द (सम् + अस् + घञ्) बनता है। जो संक्षिप्त अर्थ का बोधक है। जब दो या दो से अधिक समर्थ शब्दों को इस प्रकार एक पद में जोड़ दिया जाता है कि उसके अर्थ में कोई अन्तर न आये उस योग को समास कहते हैं तथा इस क्रिया विशिष्ट को सामासिक पद कहते हैं, दोनों पदों के समर्थ होने पर ही समास किया जाता है अन्यथा नहीं—**समर्थः पदविधिः उदा०**—सभायाः पतिः = सभापतिः में विभक्ति सूचक प्रत्यय (याः) का लोप होने पर सभापति पद, सभायाः पतिः की अपेक्षा छोटा हो गया, परन्तु अर्थों में कोई भिन्नता नहीं आयी। अतः यह समासयुक्त (सामासिक) पद कहा जायेगा।

समासों का वर्गीकरण—(१) केवल समास—ऐसा समास जिसे किसी विशेष नाम से अभिहित न किया गया हो, उसे केवल समास की श्रेणी में रखा गया है **'विशेषसंज्ञाविनिर्मुक्तः केवलसमासः'** उदाहरणतया—भूतपूर्वः (जो पहले हो चुका हो)।

(२) अव्ययीभाव समास—अव्ययीभाव शब्द का यौगिक अर्थ होता है—'जो अव्यय न हो, उसका अव्यय हो जाना।' इस समास के दोनों पदों में से प्रथम पद प्रायः अव्यय ही होता है, जबकि दूसरा पद संज्ञा होता है। यही दोनों पद मिलकर अव्यय हो जाते हैं, यथा—अधि हरि हरौ अधि (हरि में)॥

(३) तत्पुरुष समास—'तत्पुरुष' द्वितीय पद प्रधान समास है। इसमें प्रथम पद द्वितीय पद के विशेषण के रूप में प्रयुक्त होता है। 'तत्पुरुष' शब्द का विग्रह दो प्रकार से किया जा सकता है—**तस्य पुरुषः तत्पुरुषः** तथा **सः** तत्पुरुषः। इस द्विविध विग्रह के अनुसार तत्पुरुष समास के दो मुख्य भेद होते हैं—(क) व्यधिकरण तथा (ख) समानाधिकरण (कर्मधारय)।

(क) व्यधिकरण-तत्पुरुष समास—जिस तत्पुरुष समास में प्रथम पद तथा द्वितीय पद दोनों भिन्न-भिन्न विभक्तियों में हो उसे 'व्यधिकरण तत्पुरुष समास' कहते

द्वन्द्वो द्विगुपि चाहं मद् गेहे नित्यमव्ययी भावः।
तत्पुरुष कर्मधारय येनाहं स्यां बहुब्राहिः॥
चकार बहुलो द्वन्द्वः स चासौ कर्मधारय।
यस्य येषां बहुब्रीहिः शेषस्तत्पुरुषो मतः॥

हैं। उदाहरणतया राज्ञः पुरुषः राजपुरुषः में प्रथमपद राज्ञः षष्ठी विभक्ति में है, तथा द्वितीयपद पुरुषः प्रथमा विभक्ति में है। इस प्रकार दोनों पदों के भिन्न-भिन्न विभक्तियों में होने से व्यधिकरण तत्पुरुष-समास' हुआ है। व्यधिकरण के छः भेद होते हैं—

(i) द्वितीया तत्पुरुष (ii) तृतीया तत्पुरुष (iii) चतुर्थी तत्पुरुष (iv) पञ्चमी तत्पुरुष। (v) षष्ठी तत्पुरुष तथा (vi) सप्तमी तत्पुरुष समास। कहने का भाव यह है कि प्रथम पद जिस विभक्ति में होगा, उस विभक्ति से सम्बद्ध तत्पुरुष कहा जायेगा। जैसे—कृष्णश्रितः में कृष्णं + श्रितः। इस विग्रहानुसार—प्रथमपद द्वितीया विभक्ति में है। अतः यहाँ पर द्वितीया तत्पुरुष समास कहा जायेगा।

(ख) समानाधिकरण तत्पुरुष समास—जिस 'तत्पुरुष समास में प्रथम तथा द्वितीय दोनों पद एक ही विभक्ति में हों उसे 'समानाधिकरण तत्पुरुष' या कर्मधारय समास कहा जाता है। उदाहरणतया—'कृष्णः सर्पः में प्रथमपद 'कृष्ण' तथा द्वितीय पद—'सर्पः' दोनों प्रथमा विभक्ति में ही हैं। अतः दोनों में समान विभक्ति होने से यहाँ पर समानाधिकरण तत्पुरुष-समास होगा। समास की क्रिया समास के दोनों पदों को धारण करती है। अतः इसे कर्मधारय कहा जाता है। समानाधिकरण तत्पुरुष के तीन प्रमुख भेद हैं जो निम्नलिखित हैं—

(i) विशेषणपूर्णपद कर्मधारय—जिस समानाधिकरण तत्पुरुष में प्रथम पद विशेषण तथा दूसरा पद विशेष्य होता है उसे विशेषणपूर्णपद कर्मधारय कहते हैं। उदाहरणतया—नीलकमलम्। कृष्ण सर्पः इत्यादि।

(ii) उपमानपूर्वपद कर्मधारय—जिसमें एक पद उपमान (जिससे किसी की उपमा दी जाए) वाचक तथा दूसरा पद साधारण धर्म (वह गुण जिसके आधार पर उपमा दी जाए) वाचक हो, वह समानाधिकरण तत्पुरुष 'उपमान पूर्वपद कर्मधारय' समास कहा जाता है। उदाहरणतया घन इव श्यामः घनश्यामः में घन उपमान है तथा श्यामवर्ण साधारण धर्म है।

(iii) द्विगु जिस 'समानाधिकरण' तत्पुरुष में प्रथमपद संख्यावाचक हो तथा दूसरा पद संज्ञावाचक हो, उसे 'द्विगु' समास कहते हैं। उदाहरणतया—पञ्चानां गवानां समाहारः 'पञ्चगवम्' (पाँच गायों का झुण्ड)। ध्यातव्य है है कि समाहार (समूह या झुण्ड) अर्थ में द्विगुसमास सदैव नपुंसकलिंग एकवचन रहता है।

अनव्ययः अव्ययः सम्पद्यते इत्यव्ययीभावः।
तं पुरुषः तत्पुरुषः, द्वितीया तत्पुरुषः।
तेन पुरुषः तत्पुरुषः, तृतीया तत्पुरुषः।

तत्पुरुष समास के उपभेद—उपर्युक्त व्यधिकरण व समानाधिकरण के अतिरिक्त तत्पुरुष के कुछ अन्य भेद भी होते हैं जो निम्नलिखित हैं।

(i) **नञ्तत्पुरुष समास**—जिसका प्रथम पद नञ् (न) हो तथा द्वितीय पद कोई संज्ञा या विशेषण हो, उसे नञ् तत्पुरुष समास कहा जाता है। जैसे—'अब्राह्मण: = न ब्राह्मण: ।

(ii) **प्रादि तत्पुरुष समास**—जिस तत्पुरुष समास प्रथम पद 'कु' गति संज्ञक या 'प्र' आदि होता है, उसे प्रादि तत्पुरुष समास कहते हैं जैसे—कुपुरुष: = कुत्सित पुरुष: । प्राचार्य = प्रगत: आचार्य: ।

(iii) **उपपद तत्पुरुष समास**—जिस तत्पुरुष समास का प्रथम पद उपपद तथा द्वितीय पद कृदन्त (कृत् प्रत्यान्त) होता है। उसे 'उपपद तत्पुरुष समास' कहते हैं, जैसे—कुम्भकार: = कुम्भं करोति ।

(४) **बहुब्रीहि समास**—जिस समास में आए हुए दोनों (सभी) पद किसी अन्य पद के विशेषण स्वरूप होते हैं वह 'बहुब्रीहि समास' होता है। 'बहुब्रीहि' शब्द का अर्थ होता है—'जिसके पास बहुत अन्न हो वह।' यहाँ पर बहु (बहुत) ब्रीहि (अन्न) का विशेषण है और दोनों (बहु तथा ब्रीहि) मिलकर किसी अन्य पद (तीसरे) के विशेषण बनते हैं। उदाहरणतया—'पीताम्बर: = पीतम् अम्बरम् यस्य स:' में प्रथम पद 'पीतम्' दूसरे पद अम्बरम् का विशेषण अवश्य है परन्तु पीतम् तथा अम्बरम् दोनों पद मिलकर किसी अन्य पद (कृष्ण) का विशेषण बनते हैं।

'तत्पुरुष' के समान बहुब्रीहि समास भी व्यधिकरण तथा समानाधिकरण भेद से दो प्रकार का होता है। यह समास प्रथमा विभक्ति को छोड़कर अन्य सभी विभक्तियों के योग में होता है। इस अर्थ को लौकिक विग्रह में यद् (जो) शब्द द्वारा प्रकट किया जाता है, उसी प्रकार विभक्ति को ही देखकर जाना जाता है कि समास किस अर्थ में हुआ। जैसे पीतम् अम्बरं यस्य = पीताम्बर: (षष्ठी विभक्ति) तथा प्राप्तं उदकं यस्य = प्राप्तोदक: (द्वितीय विभक्ति)।

(५) **द्वन्द्व समास**—यह समस्त पद प्रधान समास है। अर्थात् अव्ययीभाव व तत्पुरुष के समान इसमें पहला या दूसरा पद प्रधान नहीं होता, अपितु सभी (दोनों)

तस्मै पुरुषः तत्पुरुषः, चतुर्थी तत्पुरुषः।
तस्मात् पुरुषः तत्पुरुषः, पञ्चमी तत्पुरुषः।
तस्य पुरुषः तत्पुरुषः, षष्ठी तत्पुरुषः।
तस्मिन् पुरुषः तत्पुरुषः, सप्तमी तत्पुरुषः।

पद प्रधान होते हैं। इसके अन्तर्गत 'च' शब्द से जुड़ी हुई दो या दो से अधिक संज्ञाओं का समास होता है। द्वन्द्व का अर्थ होता है दो। इसके मुख्यतः तीन भेद हैं जो निम्नलिखित हैं—

(i) **इतरेतर द्वन्द्व**—जब समास में आई हुई संज्ञाएँ अपनी प्रधानता तथा पृथक् व्यक्तित्व रखती हैं तो उसे इतरेतर द्वन्द्व कहते हैं, जैसे—'शिव केशवौ' = शिवश्चकेशवश्च'। ध्यातव्य है कि यदि दो संज्ञाएं हों तो समस्त पद द्विवचन में और यदि अधिक हो तो समस्त पद बहुवचन में प्रयुक्त होता है तथा लिङ्ग निर्धारण उत्तर पद के अनुसार किया जाता है।

(ii) **समाहार द्वन्द्व**—जिस द्वन्द्व समास में आयी हुई संज्ञाएं अपना अपना अर्थ बताने के साथ ही साथ प्रधानतया समाहार (समूह) का बोध करती हैं उसे समाहार द्वन्द्व कहा जाता है। यथा—पाणिपादम् = पाणी च पादौ च। इसमें समस्त पद सदैव नपुंसक लिङ्ग एकवचन में होता है।

(iii) **एक शेष द्वन्द्व**—जिस द्वन्द्व समास में दो या से अधिक पदों में से केवल एक ही शेष रह जाता है उसे 'एकशेष द्वन्द्व समास' कहते हैं। जैसे—'पितरौ = माता च पिता च। समस्त पद का वचन, समास के अङ्गभूत शब्दों की संख्या के अनुसार होता है। यदि समास में पुलिङ्ग व स्त्रीलिङ्ग दोनों प्रकार के शब्द हों तो समस्त पद पुल्लिङ्ग में होता है।

लघु सिद्धान्त कौमुदीस्थ समस्त सामासिक पदों का लौकिक-विग्रह निम्नलिखित है—

(१) केवल समासः

सामासिक पद	—	लौकिक विग्रह
भूतपूर्वः	—	पूर्वं भूतः
वागर्थाविव	—	वागर्थौइव

(२) अव्ययीभावः समासः

अधिहरि	—	हरौ अधि
अधिगोपम्	—	गोपिं अधि
उपकृष्णम्	—	कृष्णस्य समीपम्
सुमद्रम्	—	मद्राणां समृद्धिः
दुर्यवनम्	—	यवनानां व्यृद्धिः
निर्मक्षिकम्	—	मक्षिकाणां अभावः
अतिहिमम्	—	हिमस्यात्ययः
अति निद्रम्	—	निद्रा सम्प्रति न युज्यते
इति-हरि	—	हरिशब्दस्य प्रकाशः
अनुविष्णु	—	विष्णोः पश्चाद्
अनुरूपम्	—	रूपस्य योग्यम्
प्रत्यर्थम्	—	अर्थं अर्थं प्रति
यथाशक्ति	—	शक्तिमनतिक्रम्य
सहरि	—	हरेःसादृश्यम्
अनुज्येष्ठम्	—	ज्येष्ठस्यानुपूर्व्येण
सचक्रम्	—	चक्रेण युगपत्
ससखि	—	सदृशः सख्या
सक्षत्रम्	—	क्षत्राणां संपत्तिः
सतृणम्	—	तृणमप्य परित्यज्य
साग्नि	—	अग्निग्रन्थ पर्यन्तम् (अधीते)
पञ्च गङ्गम्	—	पञ्चानां गङ्गानां समाहारः
द्वियमुनम्	—	द्वयोः यमुनयोः समाहारः
उपशरदम्	—	शरदः समीपम्
प्रति विपाशम्	—	विपाशाम् अभिमुखम्

उपजरसम्	—	जराया: समीपम्
उपराजम्	—	राज्ञ: समीपम्
अध्यात्मम्	—	आत्मनि
उपचर्मम्	—	चर्मण: समीपम्
उपसमिधम्	—	समिध: समीपे
उपसमित्	—	समिध: समीपे

(३) तत्पुरुष समास:

द्वितीया तत्पुरुष:

कृष्णश्रित:	—	कृष्णं श्रित:
दु:खातीत:	—	दु:खमतीत:
नरकपतित:	—	नरकं पतित:
*प्राप्तजीविक:	—	प्राप्तो जीविकां
स्वर्गगत:	—	स्वर्गं गत:
कूपात्यस्त:	—	कूपमत्यस्त:
सुखप्राप्त:	—	सुखं प्राप्त:
सङ्कटापन्न:	—	संङ्कटमापन्न:
आशातीत:	—	आशाम् अतीत:

तृतीया तत्पुरुष:

शङ्कुलाखण्ड:	—	शंङ्कुलया खण्ड:
धान्यार्थ:	—	धान्येन अर्थ:
हरित्रात:	—	हरिणा त्रात:
नखभिन्न:	—	नखैर्भिन्न:
नखनिर्भिन्न:	—	नखैर्निर्भिन्न:

चतुर्थी तत्पुरुष:

यूपदारु	—	यूपाय दारु
अलंकुमारि:	—	कुमार्यै अलम्
द्विजार्थ:	—	द्विजाय अयम्
भूतबाले:	—	भूतेभ्यो बलि:
गोसुखम्	—	गोभ्य: सुखम्
गोहितम्	—	गोभ्यो हितम्
गोरक्षितम्	—	गोभ्यो रक्षितम्

पञ्चमी तत्पुरुषः

चोरभयम्	—	चोराद् भयम्
स्तोकान्मुक्तः	—	स्तोकाद् मुक्तः
अन्तिकादागतः	—	अन्तिकाद् आगतः
अभ्यासादागतः	—	अभ्यासाद् आगतः
दूरादागतः	—	दूराद् आगतः
कृच्छ्रादागतः	—	कृच्छ्राद् आगतः

षष्ठी तत्पुरुषः

राजपुरुषः	—	राज्ञः पुरुषः
पूर्वकायः	—	पूर्वं कायस्य
अर्धर्चः	—	अर्धम् ऋचः
अपरकायः	—	अपरं कायस्य
अर्धपिप्पली	—	अर्धं पिप्पल्याः
राजदन्तः	—	दन्तानां राजा

सप्तमी तत्पुरुषः

अक्षशौण्डः	—	अक्षेषु शौण्डः
अक्ष धूर्तः	—	अक्षेषु धूर्तः

समानाधिकरण तत्पुरुषः

पूर्वेषुकामशमी	—	पूर्वः इषुकामशमी
सप्तर्षयः	—	सप्त च ते ऋषयः
पौर्वशालः	—	पूर्वस्यां शालायां भवः
पूर्वशाला	—	पूर्वाशाला
पञ्चगवधनः	—	पञ्चगावो धनो यस्य

समानाधिकरण कर्मधारय समासः

परमराजः	—	परमश्च असौ राजा
महाराजः	—	महान् च असौ राजा
सर्वरात्रः	—	सर्वा रात्रयः
संख्यात रात्रः	—	संख्याता रात्रयः
नीलोत्पलम्	—	नीलमुत्पलम्
कृष्णसर्पः	—	कृष्णः सर्पः
घनश्यामः	—	घन इव श्यामः

शाक पार्थिव: — शाक प्रिय: पार्थिव:

देवब्राह्मण — देव पूजको ब्राह्मण:

नञ् तत्पुरुष:

अब्राह्मण: — न ब्राह्मण:

अनश्व: — न अश्व:

गति तत्पुरुष:

उरीकृत्य — उरीकृत्वा

शुक्लीकृत्य — अशुक्लं शुक्लं कृत्वा

पटपटाकृत्य — पटत् पटत् इति कृत्वा

प्रादित तत्पुरुष:

कुपुरुष: — कुत्सित: पुरुष:

सुपुरुष: — शोभन: पुरुष:

प्राचार्य: — प्रगत आचार्य:

अतिमाल: — अतिक्रान्तो मालाम्

निरंगुलम् — निर्गतमङ्गुलिभ्य:

अवकोकिल: — अवक्रुष्ट: कोकिलया

पर्य्यध्ययन: — परिग्लानोऽध्ययनाय

निष्कौशाम्बि: — निष्क्रान्त: कौशाम्ब्या:

उपपदतत्पुरुष:

कच्छपि — कच्छेन पिबति

कुम्भकार: — कुम्भं करोति

व्याघ्रि — वि = विशेषेण, आ = समन्ताद्, जिघ्रतिति

अश्वक्रीति — अश्वेन क्रीता

द्विगुसमास:

पञ्चगवम् — पञ्चानां गवां समाहार:

समाना० द्विगु समास:

द्वयङ्गुलम् — द्वे अङ्गुलीप्रमाणमस्य

पञ्चगवम् — पञ्चानां गवां समाहार:

द्विरात्रम् — द्वयोः रात्र्योः समाहारः
त्रिरात्रम् — तिसृणां रात्रीणां समाहारः

(४) बहुव्रीहि समासः

कण्ठेकालः — कण्ठेकालः यस्य सः
प्राप्तोदकः — प्राप्तम् उदकम् यम् सः
पीताम्बरः — पीतम् अम्बरम् यस्य सः
प्रपर्णः — प्रपतितानि पर्णानि यस्मात्
अपुत्रः — अवद्यिमानो पुत्रः यस्य
चित्रगुः — चित्रा गावो यस्य
रूपवद्भार्यः — रूपवती भार्या यस्य
वामोरुभार्यः — वामोरुः भार्या यस्य
कल्याणीपञ्चमाः — कल्याणी पञ्चमी यासां रात्रीणाम्
स्त्रीप्रमाणः — स्त्रीप्रमाणी यस्य
दीर्घसक्थः — दीर्घे शक्थिनी यस्य
जलजाक्षी — जलजे इव अक्षिणी यस्याः
द्विमूर्हः — द्वौ मूर्द्धानौ यस्य
त्रिमूर्द्धः — त्रयः मूर्द्धानः यस्य
अन्तर्लोमः — अन्तर्लोमानि यस्य
बहिर्लोमः — बहिर्लोमानि यस्य
व्याघ्रपात् — व्याघ्रस्येव पादौ यस्य
हस्तिपादः — हस्तिन् इव पादौ यस्य
कुसूलपादः — कुसूलस्यइव पादौ यस्य
द्विपात् — द्वौ पादौ यस्य
सुपात् — शोभनौ पादौ यस्य
उत्काकुत् — उद्गतं काकुदं यस्य
विकाकुत् — विगतं काकुदं यस्य
पूर्णकाकुत् — पूर्णं काकुदं यस्य
सुहृद् — शोभनं हृदयं यस्य सः
व्यूढोरस्कः — व्यूढम् उरो यस्य
प्रियसर्पिष्कः — प्रियं सर्पिः यस्य
युक्तयोगः — युक्तो योगो येन यस्य वा

महायशस्कः	—	महद् यशो यस्य सः
महायशाः	—	महत् यशः यस्य सः
ऊढरथः	—	ऊढो रथोयेन सः
उद्धृतोदना	—	उद्धृतं उदनं यस्याः सा
वीर पुरुषकः	—	वीरः पुरुषः यस्मिन् सः

(५) द्वन्द्व समास

अहोरात्रः	—	अहश्च रात्रिश्च
द्वादश	—	द्वौ च दश च
अष्टाविंशति	—	अष्ट च विंशतिश्च
कुक्कुटमयूर्यौ	—	कुक्कुटश्च मयरी च
मयूरी कुक्कुटौ	—	मयूरी च कुक्कुटश्च
धर्मार्थो	—	धर्मश्च अर्थश्च
धवखदिरौ	—	धवश्च खदिरश्च
संज्ञापरिभाषम्	—	संज्ञा च परिभाषा च
अर्थ धर्मौ	—	अर्थश्च धर्मश्च
हरिहरौ	—	हरिश्च हरश्च
ईश कृष्णौ	—	ईशश्च कृष्णश्च
शिव केशवौ	—	शिवश्च केशवश्च
पितरौ	—	माता च पिता
पाणिपादम्	—	पाणी च पादौ च
मार्दंगिकवैणविकं	—	मार्दङ्गिकश्च वैणविकश्च
रथिकाश्वारोहम्	—	राथिकाश्च अश्वारोहश्च
वाक्त्वचम्	—	वाक् च त्वक् च
त्वक्स्रजम्	—	त्वक् च स्रक् च
शमीदृषम्	—	शमी च दृशश्च
वाक्त्विषम्	—	वाक् च त्विष् च
छत्रोपानहम्	—	छत्रश्च उपानहश्च
प्रावृट् शरदौ	—	प्रावृट् च शरच्च